

॥ श्री खाटू श्याम जी व्रत कथा ॥

बर्बरीक से बाबा श्याम की कथा

व्रत-पाठ हेतु प्रचलित कथा का सरल हिंदी पुनर्कथन

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ श्री खाटू श्याम जी व्रत कथा ॥

प्रचलित लोककथा का सरल हिंदी पुनर्कथन।
कथा और व्रत की परंपराओं में क्षेत्रानुसार भिन्नता मिलती है।

बर्बरीक का संकल्प

प्रचलित कथा के अनुसार बर्बरीक भीम के पौत्र और घटोत्कच के पुत्र थे। वे वीर होने के साथ दयालु भी थे। उन्हें तीन दिव्य बाण प्राप्त थे, इसलिए वे तीन बाणधारी कहलाए। महाभारत का युद्ध होने वाला था। बर्बरीक ने निश्चय किया कि वे उस पक्ष का साथ देंगे जो युद्ध में निर्बल पड़ रहा होगा। इसी संकल्प के साथ वे कुरुक्षेत्र की ओर चले।

श्रीकृष्ण से भेंट

भगवान श्रीकृष्ण ने ब्राह्मण का रूप धारण करके बर्बरीक से उनके बाणों और प्रतिज्ञा के विषय में पूछा। बर्बरीक ने अपनी शक्ति पर विश्वास प्रकट किया। श्रीकृष्ण समझ गए कि यदि वे बार-बार हारने वाले पक्ष में जाते रहे, तो युद्ध का संतुलन लगातार बदलता रहेगा। अंत में दोनों सेनाओं के नष्ट हो जाने की स्थिति बन सकती थी।

॥ जय श्री श्याम ॥

॥ श्री खाटू श्याम जी व्रत कथा ॥

प्रचलित लोककथा का सरल हिंदी पुनर्कथन।
कथा और व्रत की परंपराओं में क्षेत्रानुसार भिन्नता मिलती है।

तीन बाणों की परीक्षा

लोककथा में आता है कि श्रीकृष्ण ने बर्बरीक से पीपल के सभी पत्तों को अपने बाण से चिह्नित करने के लिए कहा। उन्होंने एक पत्ता अपने पैर के नीचे छिपा लिया। बर्बरीक का बाण अन्य पत्तों को चिह्नित करके उस छिपे पत्ते तक भी पहुँच गया। तब श्रीकृष्ण को उनकी असाधारण शक्ति का प्रत्यक्ष प्रमाण मिला।

शीशदान और युद्ध-दर्शन

इसके बाद श्रीकृष्ण ने बर्बरीक से दान में उनका शीश माँगा। बर्बरीक ने दिव्य पहचान जानने की प्रार्थना की। श्रीकृष्ण ने अपना स्वरूप प्रकट किया। कथा के अनुसार बर्बरीक ने अपना शीश समर्पित कर दिया और युद्ध देखने की इच्छा व्यक्त की। श्रीकृष्ण ने उनका शीश ऊँचे स्थान पर स्थापित कराया, जहाँ से वे संपूर्ण युद्ध के साक्षी बने।

॥ जय श्री श्याम ॥

॥ श्री खाटू श्याम जी व्रत कथा ॥

प्रचलित लोककथा का सरल हिंदी पुनर्कथन।
कथा और व्रत की परंपराओं में क्षेत्रानुसार भिन्नता मिलती है।

श्याम नाम का वरदान

युद्ध समाप्त होने पर पांडवों में विजय के श्रेय को लेकर चर्चा हुई। श्रीकृष्ण उन्हें बर्बरीक के पास ले गए। बर्बरीक ने विजय के पीछे श्रीकृष्ण की शक्ति और मार्गदर्शन को प्रमुख बताया। उनकी भक्ति, त्याग और सत्यनिष्ठा से प्रसन्न श्रीकृष्ण ने उन्हें कलियुग में अपने श्याम नाम से पूजे जाने का वरदान दिया। भक्त उन्हें हारे का सहारा और शीश के दानी कहकर स्मरण करते हैं।

खाटू में प्राकट्य और कथा का संदेश

एक अन्य प्रचलित जनश्रुति के अनुसार बहुत समय बाद खाटू में एक गाय किसी विशेष स्थान पर अपना दूध बहाने लगी। वहाँ खुदाई करने पर दिव्य शीश प्राप्त हुआ। स्वप्नादेश के बाद राजा रूपसिंह चौहान ने मंदिर बनवाकर उसकी प्रतिष्ठा कराई। यही स्थान श्याम बाबा का प्रसिद्ध खाटू धाम बना।

व्रत में इस कथा का पाठ श्रद्धा, विनय और परोपकार का स्मरण कराता है। अपने परिवार की परंपरा के अनुसार नाम जाप, कथा और आरती करें। व्रत का भाव सत्य बोलने, अहंकार घटाने और जरूरतमंदों की सहायता करने में भी प्रकट हो।

॥ श्री खाटू श्याम जी व्रत कथा सम्पूर्ण ॥